chapter. 1

अध्याय-१

भारतीय वाङ्मय में राम काव्य का विशेषात्व

हिन्दी राम-काव्य परम्परा

अध्याय-१

भारतीय वाङ्मय में राम काव्य का विशेषतत्व

भारतीय चिन्ता धारा को जिस महान व्यक्तित्व ने सर्वाधिक प्रभावित किया है वह है श्रीराम का लोकोत्तर गरिमायुक्त सर्वतोमुखी अप्रतिम व्यक्तित्व। भारतीय संस्कृति को कालजयी बनाकर विश्व की प्राचीनतम् संस्कृति के रूप में सुरक्षित रखने में श्रीराम के व्यक्तित्व ने अपूर्व सफलता प्राप्त की है। विश्व कल्याण तथा मानवता की आदर्श कल्पना से परिपूर्ण उनके व्यक्तित्व ने न केवल भारतीय चिन्ता-धारा को ही वरन् समस्त विश्व-साहित्य को प्रभावित किया है। भारतीय जन-मानस की उदात्त मानवीय चेतना से युक्त राम के व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों ने भारतीय वाङ्मय की विभिन्न भाव-भूमियों को अनन्त सृजनात्मक प्रेरणा प्रदान की। कवि, लेखक, दार्शनिक सभी उनके महच्चरित्र की ओर समान रूप से आकर्षित हुये। किसी ने उन्हें काव्य का विषय बनाया तो किसी ने उनके वैविध्यपूर्ण आदर्श चरित्र को अपनी विस्तृत व्याख्या तथा तात्विक विवेचन का और किसी ने दार्शनिक चिन्तन का आधार बना कर उनके नाम, रूप आदि पर विस्तृत विचार किया। कवि कल्पना से लेकर दार्शनिक चिन्तन तक राम भारतीय वाङ्मय के आदर्श चरित्र नायक तथा गूढ़ तात्विक चिन्तन के विषय रहे हैं। राम के चरित्र की सर्वाधिक विशेषता यह है कि उसमें चारित्रिक पूर्णता, स्वाभाविकता तथा विभिन्न मानवीय आकांक्षाओं तथा भाव-भूमियों को परितुष्ट करने की अपूर्व क्षमता है। राम-काव्य के मनोवैज्ञानिक अध्येता डॉ० जगदीशप्रसाद शर्मा का तो यह स्पष्ट मत है कि "राम कथा का संगठन ही कुछ इसप्रकार है कि उसमें जीवन की गहराई और व्यापकता की अभिव्यक्ति के लिए विपुल अवकाश है। पारिवारिक कलह से लेकर राजनीतिक दाँवपेंच तक, भूख जैसी सामान्य मूल प्रवृत्ति से लेकर जिजीविषणा तथा काम-कुण्ठाओं के जटिलतम रूपों की अभिव्यक्ति के लिए रामकथा में प्रचुर परिस्थितियाँ हैं।"१

१- राम काव्य की भूमिका- पृष्ठ १० ।

राम-काव्य की उन्हीं विशेषताओं से प्रभावित होकर इस क्षेत्र के प्रसिद्ध विद्वान् डॉ० फादर कामिल बुल्के ने यह कहने में किंचित भी हिचकिचाहट नहीं दिखाई कि " राम कथा न केवल भारतीय किन्तु एशियाई संस्कृति का महत्वपूर्ण तत्व बन गई है । " १

भारतीय वांङमय में महर्षि वाल्मीकि आदिकवि के रूप में प्रतिष्ठित हैं अस्तु उनके द्वारा रचित राम-काव्य,'रामायण' को यदि हम आदि-काव्य कहें तो किसी प्रकार की असंगति न होगी। आदि मानव का प्रथम सांस्कृतिक रूप हमें भारतीय वांङ्मय में ही प्राप्त होता है। हम यह निभ्रान्ति कह सकते हैं कि मानव के विकास की कहानी का उद्गम-स्थल तथा उसकी बौद्धिक चेतना का उत्स भारतीय वांङ्मय ही है। वैदिक संस्कृति के रूप में जिस मानवीय सभ्यता का विकास हुआ था वह विश्व की अनेक प्राचीन संस्कृतियों में से भी प्राचीन है,यह विवाद का विषय अब नहीं रहा है। सांस्कृतिक विकास की अखण्ड यात्रा में महर्षि वाल्मीकि द्वारा प्रस्तुत भारतीय जन-जीवन की विस्तृत व्याख्या अपना विशेष महत्व रखती है। आदि-कवि के मानस-पटल पर जिस सुसंस्कृत आदर्श मानव का चरित्र सर्वप्रथम साकार हुआ वह इतना पूर्ण और गरिमायुक्त था कि मानव-जाति के बौद्धिक चेतना के इतिहास में उसके समान अन्य किसी चरित्र की कल्पना यदि असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य थी। लौकिक होते हुये भी वह लोकोत्तर था। इस आदर्श चरित्र की परिकल्पना से ही महर्षि वाल्मीकि ने मानव के सर्वोच्च राजनैतिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक जीवन की विशद व्याख्या प्रस्तुत की। उनके राम विभिन्न मानवीय संबंधों के उच्चतम् आदर्श के रूप में लोक-नायक थे। महर्षि वाल्मीकि के पश्चात् कालान्तर में राम-काव्य के अन्य गायकों ने सार्वजनिक तथा वैयक्तिक जीवन के व्यवहारिक पक्ष, शासक तथा शासित एवं साधारण नागरिक के कर्तव्य-पालन,शास्त्र-सम्मत धर्म-पथ तथा लोक नीति के परम्परागत विभिन्न स्वरूपों का निर्धारण किया साथ ही रामचरित्र के माध्यम से आदर्श समाज जीवन की व्याख्या प्रस्तुत की। भारतीय संस्कृति के प्रसिद्ध विद्वान् डॉ० देवराज के शब्दों में हम यह कहने क

१-डॉ० फादर कामिल बुल्के- राम कथा, उद्भव और विकास, पृष्ठ ४६१

साहस कर सकते हैं कि " विशुद्ध नैतिकता की दृष्टि से मानव जाति का कोई कवि राम से उच्चतर व्यक्तित्व की कल्पना कर सका है या कर सकेगा इसमें सन्देह है।" १

जीवन और जगत , सृष्टा तथा सृष्टि के संबंध में जो विचार राम काव्य के माध्यम से विश्व साहित्य के सम्मुख आये वे इतने पुष्ट और ठोस वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित थे कि आज के वैज्ञानिक युग में भी उनकी सत्यता पर शंका नहीं की जा सकी। अध्ययन की सुविधाओं की दृष्टि से हम ~~राम कथा~~ राम-काव्य के इस सम्पूर्ण वैशिष्ट्य को निम्नांकित दृष्टि विन्दुओं से क्रमबद्ध कर सकते हैं।

१- भारतीय जीवन दर्शन की सफल प्रतिष्ठा।

२- अभ्युदय और निश्रेयस का अपूर्व समन्वय।

३- मानवता की उदात्त भावना।

४- वैयक्तिक तथा सामूहिक जीवन से समन्वित लोक धर्म की सफल अभिव्यक्ति

५- विभिन्न काव्य शैलियों का प्रयोग।

१-भारतीय जीवन दर्शन की सफल प्रतिष्ठा :

भारतीय जीवन दर्शन की विस्तृत व्याख्या राम-काव्य के माध्यम से ही विश्व-साहित्य को सर्वप्रथम प्राप्त हो सकी, यदि यह कहा जाये तो अतिश्योक्ति न होगी। राम-काव्य में प्रतिबिम्बित भारतीय जीवन का सांस्कृतिक तथा सामाजिक पक्ष इतना उज्ज्वल, महान तथा पूर्ण है कि विश्व के इतिहास में उसकी समानता करने वाला अन्य कोई उदाहरण नहीं मिलता। सामाजिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक आदर्शों की सर्वोच्च उपलब्धि राम के चरित्र में एक साथ ही मिलती है। युगानुरूप बदलते हुये सन्दर्भों में उनके चरित्र में जिन उदात्त भावनाओं और आदर्शों को राम-काव्य के गायकों ने मूर्त किया है उससे भारतीय जीवन दर्शन की एक अखण्ड धारा को दृष्टिगत किया जा सकता है। चारित्रिक

१-डॉ० देवराज - भारतीय संस्कृति -पृष्ठ २०३ तृतीय संस्करण

पावनता , समाज तथा राष्ट्र के लिए निज का बलिदान, प्रजारंजन तथा जनहित में अपनी प्रिय से प्रिय वस्तु का तृणावत् त्याग आदि राम-काव्य में प्रतिबिम्बित राम के चरित्र की ऐसी विशेषतायें हैं जो विशुद्ध भारतीय जीवन दर्शन की अमिट छाप विश्व साहित्य के अनेक चरित्र नायकों पर बिना अपना प्रभाव छोड़े नहीं रहती। वैयक्तिक, पारिवारिक तथा सामाजिक दायित्वों के प्रति राम का कर्तव्यनिष्ठ जीवन भारतीय जीवन-दर्शन के उच्चतम स्तर को विश्व साहित्य के सम्मुख प्रस्तुत करता है। पारस्परिक विद्वेष, वर्ग-भेद, जाति-भेद, अस्पृश्यता, धर्मान्धता, रूढ़िवादिता आदि अनेक सामाजिक कुरीतियों एवं विकृतियों के नये समाधान मनोवैज्ञानिक आधार पर राम के चरित्र के माध्यम से राम-काव्य के गायकों ने प्रस्तुत किये। समकालीन युग-बोध से सम्पृक्त नये रूपों तथा सन्दर्भों में उनका प्रेरणास्पद स्वरूप काव्य के माध्यम से इस प्रकार उभर कर आया कि राम का चरित्र भारतीय संस्कृति और जीवन दर्शन का यथार्थ बन गया। यदि किसी एक ही चरित्र का अध्ययन कर कोई सम्पूर्ण भारतीय जीवन दर्शन को समझने का प्रयास करना चाहे तो यह नि:संकोच रूप से कहा जा सकता है कि वह चरित्र कोई अन्य न होकर केवल राम का ही हो सकता है। राम काव्य में राम के चारित्रिक वैशिष्ट्य को जिस बिन्दु पर ले जाकर स्थापित किया गया है उसकी ऊँचाई तक विश्व-साहित्य का कोई भी चरित्र-नायक नहीं पहुँच सका।

२-अभ्युदय और निश्रेयस का अपूर्व समन्वय :

अभ्युदय और निश्रेयस का जो अपूर्व समन्वय राम-काव्य में उपलब्ध है वह भारतीय साहित्य में अन्यत्र दुर्लभ है। भारतीय संस्कृति में मानव केवल भौतिक आवश्यकताओं का पुंज मात्र नहीं माना गया अपितु उसे आध्यात्मिक शक्ति का प्रतिनिधि स्वीकार कर अभ्युदय और निश्रेयस दोनों का अधिकारी माना गया है। व्यक्ति ही समष्टि का उपकरण है अत: व्यक्ति के विकास से ही समाज का विकास सम्भव है। व्यक्ति के

विकास और समाज के हित सम्पादन के उद्देश्य से ही भारतीय संस्कृति में धर्म, अर्थ, काम , मोक्ष चार पुरुषार्थों की कल्पना की गई है जो एक दूसरे के पूरक और पोषक हैं । भारतीय संस्कृति ने मानव जीवन के प्रति एकांगी दृष्टिकोण न अपना कर उसकी व्यावहारिक यथार्थता को स्वीकार किया है। धर्म के द्वारा नियंत्रित अर्थ और काम, जीवन को अभ्युदय की चरम सीमा तक ले जाने के लिये मानव को सतत् क्रियाशील, परिश्रमी और उद्योगी बनाते हैं। जीवन में इच्छानुसार सम्पन्नता तथा सुख की उपलब्धि के लिए अर्थोपार्जन जितना आवश्यक है उतना ही काम की परितुष्टि भी आवश्यक है। किन्तु अनियंत्रित होने पर यह दोनों ही जीवन को पतन की ओर ले जाते हैं। शोषण, उत्पीड़न, संघर्ष और वैयक्तिक कुण्ठा से अभिभूत होकर मानव निरन्तर अशान्ति का अनुभव करने लगता है और जीवन के चरम लक्ष्य से दूर हटकर पशु प्रवृत्तियों का शिकार हो जाता है। भारतीय संस्कृति में इसीलिये अर्थ तथा काम की स्वाभाविक प्रवृत्ति का निषेध न करके उसमें व्यक्ति के जीवन की उद्देश्य पूर्ण योजना प्रस्तुत की गई है जिसका आधार धर्म है। अर्थ तथा काम की नैसर्गिक प्रवृत्तियों को धर्म के आधार पर परिष्कृत कर महत्वपूर्ण सामाजिक उत्तरदायित्व के पालन तथा निर्वाह के लिये तथा ऐहिक जीवन की पूर्णता एवं अभ्युदय की सिद्धि के लिए मार्ग दर्शन प्रस्तुत किया गया है। डॉ० मदनगोपाल गुप्त ने इसे भारतीय संस्कृति की विशेषताओं के अन्तर्गत लक्ष्य युक्त जीवन की संज्ञा दी है। १

भारतीय संस्कृति में जीवन का चरम लक्ष्य मोक्ष की उपलब्धि माना है, वही निश्रेयस है। अध्यात्म-प्रधान होने के कारण उसने मानव जीवन में उदात्त गुणों के विकास की सतत् प्रेरणा प्रदान की और भौतिक सुखों में लिप्त न रह कर उससे मुक्त होने की ओर निरन्तर ध्यान रखा है। भारतीयों ने भौतिक क्षेत्र में यथेष्ट उन्नति करके जीवनगत धर्म साध्य-आध्यात्मिकता को ही स्वीकार किया था अस्तु भारतीय-साहित्य में इन

१-डॉ०मदनगोपाल गुप्त- म०का०हिन्दी काव्य में भारतीय संस्कृति पृष्ठ-५५

दोनों के समन्वय के प्रयास पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं। रामकाव्य में, जैसा कि प्रारम्भ में ही कहा जा चुका है, इसी समन्वय की सफल प्रतिष्ठा के दर्शन होते हैं। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, पुरुषार्थ चतुष्टय शील मानव की कथा को ही राम-काव्य में विभिन्न दृष्टिकोणों से प्रस्तुत किया गया है। राम को अवतार रूप में ग्रहण करके भी उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम कहकर सदाचार सम्पन्न जीवन का उच्चतम् आदर्श प्रस्तुत करते हुए भौतिक जीवन की श्रेष्ठतम् उपलब्धियों को प्राप्त कर जीवन के उच्चतम् लक्ष्य की ओर प्रयत्नशील दिखाया गया है। धर्म के द्वारा नियंत्रित अर्थ और काम ने राम के जीवन में त्याग, सहिष्णुता, कृपालुता, शरणागत-वत्सलता, एकपत्नी व्रतत्व, असीम धैर्य, सदाचार, कर्तव्य-परायणता, संयम तथा नैतिकता जैसे उदात्त गुणों की सृष्टि की। राम-काव्य में राम तथा रावण के चरित्रों के माध्यम से यह प्रदर्शित किया गया है कि भौतिक जीवन की उपलब्धियाँ जब धर्म विहीन होकर आध्यात्मिक साधना से रहित हो जाती हैं तो उनमें अहंकार, दम्भ मोह लिप्सा तथा वासना का दानवीय रूप उठ खड़ा होता है - जो समाज का विरोधी होकर उसकी मर्यादाओं को नष्ट करता हुआ मानवता के विनाश की ओर अग्रसर हो जाता है। रावण को इसी का प्रतीक मानकर सम्पूर्ण राम-काव्य में उसे आसुरी शक्तियों का नायक और विश्वद्रोही माना गया है जिसके विनाश के लिये राम को सदाचार, कर्तव्यनिष्ठ तथा उदात्त दैवी गुणों से युक्त एक महान लोक-नायक के रूप में संघर्षरत दिखाया गया है। इतना ही नहीं, राम-काव्य के अन्य पात्रों के माध्यम से अभ्युदय तथा निश्रेयस में पूर्ण समन्वय का प्रयास किया गया है। इनमें हनुमान, लक्ष्मण, भरत, वशिष्ठ, जनक तथा दशरथ के चरित्र अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। नारी पात्रों में भी कौशल्या, सुमित्रा, सीता के चरित इस दृष्टि से देखे जा सकते हैं। गृहस्थ-जीवन में रहकर भी वशिष्ठ ऋषि थे तथा जनक 'विदेह' के नाम से - ज्ञान, वैराग्य एवं आध्यात्मिकता से युक्त जीवन व्यतीत करने वाले सम्राट् थे। भौतिकता से पूर्णतः दूर तपोवन में निवास करने वाले ~~सम्राट थे~~ विश्वामित्र को समाज चिंता में रत मानवता की रक्षा

के लिए राम और लक्ष्मण जैसे योद्धाओं के निर्माण का कार्य इसी लिये स्वीकार करना पड़ा क्योंकि मोक्ष की साधना ऐकान्तिक होकर जीवन लक्ष्य से दूर हो गई थी अत: जीवन को एकांगी होने से बचाने के लिये उन्होंने साधनों को एकत्र कर समाज रक्षा के कार्य का सूत्रपात किया। भरत भौतिक सम्पन्नता तथा अभ्युदय के उच्च शिखर पर पहुँचकर भी संत बने रहे। हनुमान आजन्म ब्रह्मचारी तथा पारिवारिक जीवन से दूर रहकर भी समाज विरोधी तत्वों तथा आसुरी शक्तियों के दमन के लिये राम द्वारा संचालित महान् अभियान में निरन्तर लगे रहे। लक्ष्मण का जीवन भी इसी प्रकार इस महा अभियान में सलंग्न एकनिष्ठ समाज सेवक के रूप में व्यतीत हुआ। इस विवेचन से राम-काव्य में अभ्युदय तथा निश्रेयस का अपूर्व समन्वय स्पष्ट हो जाता है।

३- मानवता की उदात्त भावना :

विश्व कल्याण तथा मानव-मात्र के प्रति आत्मीयता की उदात्त भावना ने भारतीय जीवन दर्शन को इतना प्रभावित किया है कि उसने सृष्टि की सर्वोच्च एवं असीम सत्ता को ही नर रूप में पृथ्वी पर अवतरित होने की महत्कल्पना की है। विश्व की किसी भी संस्कृति में सभंवत: ऐसी कल्पना के दर्शन नहीं होते। युग की आवश्यकता के अनुरूप उस परम सत्ता का विभिन्न रूपों में अवतरित होकर अपनी अजेय सामर्थ्य से विश्व-मानवता की रक्षा करने की घोषणा भारतीय मनीषियों द्वारा की गई एक अत्यन्त मनोरम कल्पना हैजिसे अवतार की संज्ञा दी गई है। अवतार की इस भावना में विश्व मानवता के संरक्षण पर ही विशेष बल दिया गया है। अनीतियों के बढ़ते हुये विनाशक प्रभाव से जीवन मूल्यों एवं मानव समाज की मर्यादाओं की सुरक्षा तथा पुनर्स्थापना, मानवता के विध्वंसक तत्वों के विनाश तथा दुष्प्रवृत्तियों के बढ़ते हुये घिनौने रूप से सत्प्रवृत्तियों की रक्षा के लिए ही उस परम सत्ता के अवतार रूप में इस पृथ्वी पर साकार होने की कल्पना की गई है। राम-काव्य मे राम को अवतार रूप में ग्रहण कर उनके द्वारा किये गये समस्त कार्यों को विश्व - कल्याण तथा मानवता की रक्षा का उच्चतम् प्रयास ही स्वीकार किया

गया है। विभिन्न वर्गों, सम्प्रदायों तथा राज्यों में एकता स्थापित कर राष्ट्रीय एकता तथा सामाजिक उन्नयन में राम का चरित्र कितना सहायक सिद्ध हुआ है, इसे राम-काव्य में ही देखा जा सकता है। राम के जीवन में जिन उदात्त मानवीय गुणों का स्वाभाविक विकास प्रस्तुत किया गया है वस्तुत: विश्वमैत्री तथा मानवता के लिये वे बड़े प्रेरणास्पद सिद्ध हुये हैं। असीम सामर्थ्य होते हुये भी वे अनन्त शील, कृपा, क्षमा, दया, सदाशयता, उदारता आदि गुणों के समुच्चय थे। कालानल तुल्य क्रोध एवं संहारक शक्ति होते हुये भी उनमें मर्यादा के पालन तथा दूसरों की प्रतिष्ठा एवं सम्मान की रक्षा तथा आदर का भाव था। वे वज्र से भी अधिक कठोर तथा पुष्प से भी अधिक कोमल स्वभाव के थे। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि राम काव्य में प्रतिबिम्बित भारतीय जीवन में मानवता के लिये आवश्यक उन सभी उदात्त गुणों के स्वाभाविक विकास की सहज प्रक्रिया के दर्शन होते हैं जो अन्यत्र दुर्लभ हैं।

४. <u>वैयक्तिक तथा सामूहिक जीवन से समन्वित लोकधर्म की सफल अभिव्यक्ति :-</u>

राम-काव्य की एक अन्य विशेषता यह है कि उसमें मानव के वैयक्तिक तथा सामूहिक जीवन से समन्वित लोक धर्म की सफल अभिव्यक्ति मिलती है। कठिन से कठिन परिस्थितियों का अदम्य साहस तथा अप्रतिम बौद्धिक कौशल के साथ निर्भय होकर सामना करना, अपने शील से शत्रुओं के मन को जीतने की अद्भुत क्षमता, साधनहीन होने पर भी बड़े से बड़े अभियान को सफलतापूर्वक सम्पन्न करने की सगंठनात्मक कुशलता तथा दूरदर्शिता के उदाहरण राम-काव्य में प्राप्त होते हैं जिनमें राम के चारित्रिक वैशिष्ट्य को ही समग्र रूप से उद्घाटित किया गया है। विश्व-विजयी रावण की अपार सैन्य-शक्ति को मार्ग की समस्त दुर्जेय बाधाओं को पार कर एक वनवासी साधन हीन राजकुमार किस प्रकार धूलि-धूसरित कर सका यह किसी से छिपा नहीं। वनवासी बानर जाति के वीरों की एक विशाल सेना सगंठित कर अपनी सैन्य कुशलता, अक्षय ध्येय निष्ठा, अदम्य साहस, दूरदर्शिता तथा अपराजित इच्छाशक्ति के बल पर राम ने जिस महान् विजय-

यात्रा का सफल संचालन किया था वह उनके वैयक्तिक तथा सामूहिक जीवन की सफल अभिव्यक्ति का उच्चतम उदाहरण है। राम का वैयक्तिक जीवन यदि एक और पग पग पर साधना और सयंम का जीवन था तो दूसरी और उनका सामूहिक जीवन भी उज्ज्वल चरित्र से सम्पन्न असीम सामर्थ्य-युक्त अनन्त शील के दिव्य गुणों से विभूषित था जिससे उनके सम्पर्क में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिये वे प्रेरणा के केन्द्र बने रहे। जन्म से लेकर जीवन के अन्तिम क्षणों तक राम कर्तव्य पथ पर अडिग और निस्पृह होकर डटे रहे। कोई प्रलोभन अथवा कोई आकर्षण उन्हें अपने कर्तव्य-पथ से विचलित न कर सका। विश्व-साहित्य में वैयक्तिक तथा सामूहिक जीवन की इतनी समन्वात्मक पूर्णता कहीं नहीं दिखाई देती। राम-काव्य की विशेषता केवल इसमें नहीं है कि उसका नायक अप्रतिम चरित्रवान, असीम सामर्थ्ययुक्त, अनन्तशील सम्पन्न, महान विजेता, उच्च कुलोद्भव महान लोकनायक था वरन् इस बात में है कि उसके सम्पर्क में आने वाला प्रत्येक पात्र उसके चरित्र से प्रभावित होकर वैयक्तिक तथा सामूहिक जीवन की उच्चतम उपलब्धि के लिये प्रयत्नशील है।

जिस प्रकार राम के जीवन में वैयक्तिक उत्कर्ष और सामूहिक उत्थान का अपूर्व समन्वय मिलता है उसी प्रकार ~~[illegible] के~~ लोक-धर्म की स्थापना के लिये राम के चरित्र का आश्रय लेकर काव्यकारों ने जिस महत्वपूर्ण और प्रभावशाली चरित्र का उद्घाटन किया है वह अन्यत्र दुर्लभ है। व्यक्तिगत साधना में ऐकान्तिकता का भाव अधिक रहता है जिससे समष्टि का भाव मन्द पड़ जाता है तथा व्यक्तिगत कल्याण, मोक्ष अथवा परमपद की प्राप्ति का भाव उतना प्रबल हो जाता है कि समाज की हित चिन्ता तथा लोक-कल्याण की भावना को अवकाश नहीं मिलता। मिथ्या दम्भ, अहमन्यता, पाखण्ड, सीमित मतवाद, अकर्मण्यता तथा असहिष्णुता की वृद्धि होने लगती है जो लोक कल्याण के मार्ग में निश्चित ही बाधक सिद्ध होती है। कर्म, ज्ञान और उपासना के मार्ग जो व्यक्तिगत साधना के प्रमुख साधन पथ हैं, काल पाकर दोषग्रस्त हो जाते हैं। कर्म अर्थहीन

विधि-विधानों के बाहुल्य से निकम्मा सिद्ध होता है, ज्ञान रहस्य और गुह्य भावना से परिपूर्ण होने पर पाखण्ड और अकर्मण्यता का रूप ग्रहण कर लेता है और उपासना अथवा भक्ति इन्द्रियों के भोग की वासना से कलुषित हो सकती है। उच्च से उच्च आदर्श निरर्थक सिद्ध हो जाते हैं यदि उनका कोई व्यवहारिक पक्ष नहीं होता। अहिंसा मानवता का विशिष्ट आभूषण है और अति उच्च सिद्धान्त है किन्तु जो हाथ दुष्ट दमन और अत्याचार का प्रतिशोध करने के लिये नहीं उठते, समाज, धर्म तथा देश पर आने वाले संकट के विरोध में जो कटिबद्ध होकर कर्मरत नहीं होता, उसे कायर, दम्भी अथवा देशहन्ता ही कहा जा सकता है ? संसार में सभी साधु पुरुष नहीं होते ~~सकते~~ । सज्जन और दुर्जन के मिले-जुले स्वरूप को ही जगत की सामान्य स्थिति मानकर तदनुरूप उसके नियंत्रण की व्यवस्था जिस धर्म में नहीं की गई उसे लोकधर्म नहीं कहा जा सकता। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने राम-काव्य में गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा प्रस्थापित लोक-धर्म की चर्चा करते हुए स्पष्ट यह कहा है कि " जो धर्म उपदेश द्वारा न सुधरने वाले दुष्टों और अत्याचारियों को दुष्टता के लिये छोड़ दे उनके लिये कोई व्यवस्था न करे वह लोक धर्म नहीं, व्यक्तिगत साधना है ।"[1] रामकाव्य में राम के चरित्र के माध्यम से ऐसे लोक धर्म की स्थापना के प्रभावशाली चित्र उपस्थित किये गये हैं । राम-चरित्र में लोक-धर्म की रक्षा, पालन तथा निर्वाह की ~~समन्वयात्मक~~ प्रवृत्तियाँ ~~को प्रदर्शित किया गया~~ एक साथ मिलती हैं। तथा उनमें शक्ति, शील और सौन्दर्य ~~से युक्त राम को चरित्र लोक-धर्म~~ का इस प्रकार समन्वय हुआ है कि जिससे ~~का उन सभी विधाओं के उपयुक्त चित्रित किया गया है जिनसे~~ समाज में शौर्य, मर्यादा तथा सौन्दर्य की प्राकृतिक भावनाओं को निरन्तर बल मिलता रहेगा । लोक-धर्म में बाधक साम्प्रदायिक मतवादों को लोक-धर्म की स्थापना में सहायक बनाने के लिये राम-काव्य के गायकों ने लोक नायक राम के चरित्र के माध्यम से ऐसी समन्वयात्मक पद्धति का अनुसरण किया है जिससे शैव,

---

१-आचार्य रामचन्द्र शुक्ल - गोस्वामी तुलसीदास पृष्ठ-२४ सप्तम संस्करण

शक्ति, वैष्णव, जैन, बौद्ध आदि सभी साम्प्रदायिक मत-भेद दूर होकर पारस्परिक सहिष्णुता तथा सहयोग की भावना को बल मिला। राम के आदर्श चरित्र के भीतर धर्म के विभिन्न रूपों को चित्रित कर जनता के सम्मुख लोक की रक्षा करने वाले प्राकृतिक धर्म का भव्यतम रूप प्रस्तुत किया गया जिसमें सत्यव्रत; उदारता, क्षमा, आज्ञा पालन, नम्रता, सुशीलता, दया, पितृभक्ति, निर्भयता, विजगीषु भावना, शौर्य तथा संघर्षों से जूझने के अदम्य साहसिक भावों को बल मिला।१ नीति प्रीति, परमार्थ तथा स्वार्थ में व्यक्ति के कर्तव्याकर्तव्य का बोध कराने वाले चित्रों के साथ ही क्रोध ,घृणा ,शोक, विनाश तथा ध्वंशादि के प्रभावशाली चित्र भी अंकित किये गये। साधु तथा सज्जन की रक्षा,दुर्जन तथा आततायी के दमन, दीन-असहाय और साधन हीन को त्रस्त करने वाले असामाजिक तत्वों से निपटने तथा कठिन कर्तव्य के पालन में जिस शौर्य और दृढ़ता की आवश्यकता होती है, उसकी विभिन्न भाव-भूमियों के चित्र राम-काव्य में पाये जाते हैं। वस्तुत: लोक-धर्म की ऐसी उच्च कल्पना तथा वैयक्तिक एवं सामूहिक जीवन की समन्वात्मक स्थिति भारतीय साहित्य में राम-काव्य के माध्यम से ही आती हुई दिखाई देती है।राम और रावण का संघर्ष विश्व की ऐसी दो विचार धाराओं का संघर्ष था जिसे मानवता के रक्षक तथा उसके विध्वंशक तत्वों के प्रतीक रूप में देखा जा सकता है। तात्त्विक विवेचन करने पर यह बात और भी स्पष्ट हो जाती है। प्रत्येक युग की दुष्प्रवृत्तियाँ मानवता के विनाश के लिये रावण का रूप धारण कर लेती हैं और उनसे संघर्ष करने वाली सत् प्रवृत्तियाँ राम के रूप में युग चेतना का प्रतिनिधित्व करती हुई मानवता का संरक्षण करती हैं। लोक-कल्याण की इस पृष्ठ भूमि में राम काव्य का विशेष महत्व स्पष्ट दिखाई देता है।

५- विभिन्न काव्य शैलियों का प्रयोग :

राम काव्य में विभिन्न काव्य शैलियों के सफल प्रयोग मिलते हैं। करुणा विगलित -शोकार्त आदि कवि की वाणी ने जिन शब्दों में

१-आचार्य रामचन्द्र शुक्ल,गोस्वामी तुलसीदास पृष्ठ-२४ सप्तम संस्करण

उनकी आन्तरिक व्यथा को अनायास ही प्रकट किया था वह भाषा तथा छन्द योजना के रूप में उनके काव्य के अन्तर्गत विकसित होती हुई दिखाई देती है। 'वाल्मीकि रामायण' में अनुष्टुप छन्दों की प्रधानता है जिनकी विशेषता यह है कि उनमें गेयता तथा सहजता होती है। वस्तुत: वाल्मीकि रामायण की पौराणिक शैली में रचना होने के बाद राम काव्य धारा में विभिन्न काव्यरूपों का विकास हुआ जिनमें प्रबन्धात्मक काव्य शैली तथा नाटक मुख्य रूप से प्रचलित हुए। 'रघुवंश छ०' की रचना से साहित्यिक शैली का विकास हुआ जिसमें प्रबन्ध काव्यों की रचना की प्रेरणा मिली। इसी प्रकार भवभूति के 'उत्तर रामचरित' से नाटकों की शैली में राम काव्य का विकास हुआ जो 'प्रसन्न राघव' 'हनुमन्नाटक' आदि रचनाओं में अपने अत्यन्त विकसित रूप में मिलता है।

हिन्दी राम काव्य में प्रबन्धात्मक काव्य शैली का विकास तथा उसमें उपलब्ध होने वाले सम्वाद सौष्ठव एवं संस्कृत के नाटकों की पुष्कल सामग्री का ग्रहण इस सम्भावना को पुष्ट करता है कि वह संस्कृत के महाकाव्यों तथा नाटकों से प्रभावित हुआ है। इसी प्रकार मुक्तक तथा गीति शैली में भी हिन्दी राम काव्य धारा के विकास को लक्ष्य किया जा सकता है। महाकवि तुलसीदास के आविर्भाव के पश्चात् रामकाव्य धारा में प्रबन्ध, मुक्तक तथा गीत शैली के सफल प्रयोगों के साथ ही लोक गीति शैली में भी रचनायें प्रस्तुत की गईं। स्वयं महाकवि तुलसीदास जी ने बरवै तथा सोहले जैसे लोक गीतों को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाकर रामचरित्र की लोक प्रियता तथा व्यापकता में अभूतपूर्व वृद्धि की। लोक चेतना का प्रतिनिधित्व करने वाले लोक गीतों, लोक कथाओं और लोक वार्ताओं में विकसित होने वाले राम काव्य में जन मानस की इच्छाओं, साधों और सम्वेदनाओं को अभिव्यक्त करने की सामर्थ्य थी। फलत: भारतीय साहित्य के अत्यन्त महत्वपूर्ण चरित्र (राम, सीता, लक्ष्मण तथा कौशल्यादि) जन साधारण के लिये अधिक विश्वासोत्पादक बन गये।

महाकवि तुलसीदास द्वारा गृहीत काव्य शैली का प्रभाव उनके परवर्ती हिन्दी रामकाव्य में स्पष्टरूप से दिखाई देता है। प्रयोजन की दृष्टि से भी यह काव्य विभिन्न काव्य रूपों में विकसित हुआ है जिसमें सहजता अधिक तथा-

कृत्रिमता कम दिखाई देती है। भारतीय धर्म साधना के विभिन्न रूपों तथा वैयक्तिक एवं सामूहिक रुचियों के आधार पर हिन्दी राम काव्य धारा में विभिन्न काव्य शैलियों का विकास सहज रूप में ही सम्भव हो सका। यह सत्य है कि हिन्दी राम काव्य के गायकों ने भाषा, अलंकार अथवा छन्द योजना को केवल अभिव्यक्ति का साधन मात्र ही माना है। उन्हें जो कुछ कहना था उसके लिए उन्होंने माध्यम की चिन्ता अधिक नहीं की किन्तु इसी कारण उनका कला पक्ष निर्बल अथवा महत्वहीन हो गया हो यह भी नहीं कहा जा सकता है। कबीर जैसे निर्गुणवादी भक्त कवियों ने राम नाम को योगियों के तत्व चिन्तन के साथ सम्बद्ध करके भी व्यक्तिगत साधना में उसे परम प्रेमास्पद बना दिया। रूपकों की सहायता से तथा प्रतीकों के माध्यम से उन्होंने राम नाम के अद्भुत चमत्कार का उद्घाटन किया। सगुण भक्त कवियों ने अपनी वैयक्तिक धार्मिक निष्ठा तथा साधना के अनुरूप अलौकिक काव्य प्रतिभा के बल पर ज्ञान तथा भक्ति के समन्वित रूप को इतना सरल, मनोहारी तथा लोकग्राही रूप प्रदान किया कि राम काव्य भक्ति तथा ज्ञान का अनुपम विश्व कोष बन गया। असंख्य अप्राकृत गुण विशिष्ट, अपरिमित शक्तिशाली, पूर्णानन्द दिव्य विग्रह के रूप में राम को स्वीकार कर उनका निर्गुण निर्विशेष और अमूर्त ब्रह्म से अभेद्य संबंध स्थापित कर उनकी लीला माधुरी का लोकोत्तर आनन्द प्राप्त करने के लिये ही राम काव्य में एक नवीन धारा तथा नवीन शैली का उदय हुआ जिसमें ज्ञान, कर्म, उपासना तीनों का समन्वित रूप प्रकट हुआ। इस धारा को कालान्तर में रसिक साधना अथवा माधुर्य भावना के नाम से जाना गया। रसिक साधना के उपासक राम भक्त कवियों ने लीला गान के लिये अत्यन्त सरस ललित पदावली का प्रयोग किया है जिसमें श्रृंगारिकता का पुट अधिक होने के कारण भले ही वह कहीं कहीं अश्लील सा दिखाई पड़े किन्तु भाषा तथा शैली, अलंकार एवं छन्द विधान की दृष्टि से उसमें विविध प्रयोगों के सफल चित्र अवश्य मिलते हैं।

जैसा कि ऊपर संकेत किया जा चुका है कि काव्य रूपों में

हिन्दी राम काव्य प्रबन्ध तथा मुक्तक दोनों ही रूप में विकसित हुआ है। रामचरितमानस के पश्चात् उसी शैली में अन्य कई प्रबन्ध काव्यों की रचना हुई जिनमें महा काव्य तथा खण्ड काव्य दोनों रूप मिलते हैं। इसी प्रकार मुक्तक पद्धति पर भी राम काव्य का विकास हुआ है। यहाँ एक बात संकेत कर देना उचित होगा कि प्रारम्भ में समस्त हिन्दी राम काव्य अवधी में ही रचा गया है किन्तु कालान्तर में हिन्दी की खड़ी बोली में भी उसकी रचना हुई है तथा हिन्दी के अतिरिक्त अन्य भारतीय भाषाओं में भी उसकी रचनायें मिलती हैं। खड़ी बोली में गीत, अतुकांत छन्द तथा गद्य गीतों में भी राम काव्य मिलता है ।

निष्कर्ष :

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट तथ्य सामने आता है कि राम काव्य में विभिन्न शैलियों का सफल प्रयोग मिलता है जो एक ओर तो अपने आदि काव्य से मूलत: सबंधित है किन्तु दूसरी ओर उसके गतिमान चरण विकास की विभिन्न अवस्थाओं को पार करते हुये नवीन काव्य शैलियों तथा काव्य रूपों के क्षेत्र से युगीन समस्याओं के समाधान प्रस्तुत करते हुये सतत् गति शील हैं। विकास की इस यात्रा में हिन्दी राम काव्य ने किस प्रकार विभिन्न रूप धारण किये हैं इसका विस्तृत परिचय हम अगले अध्याय में प्रस्तुत करेंगे ।

राम काव्य की परम्परा

पूर्ववर्ती पृष्ठों के विवेचन में यह निर्दिष्ट किया जा चुका है कि यदि कोई सम्पूर्ण भारतीय जीवन दर्शन को समझने के लिये किसी एक ही चरित्र का अध्ययन करना चाहे तो यह निस्संकोच कहा जा सकता है कि वह कोई अन्य न होकर श्री राम का ही चरित्र हो सकता है जो राम काव्य में प्रतिबिम्बित होकर भारतीय जीवन दर्शन तथा यहां की संस्कृति का पर्याय बन गया है। हिन्दी राम-काव्य के विकास के मूल में प्राचीन संस्कृत साहित्य की एक दीर्घकालीन परम्परा है। संस्कृत में रामकथा प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओं के साहित्य से होती हुई मध्यवर्ती काल में कुछ समय के लिए अवरुद्ध सी होकर भक्ति काल में पुन: नई चेतना द्वारा प्रेरित एवं गतिशील दृष्टिगोचर होती है। अत: पूर्ववर्ती काल और भक्ति-काल की राम काव्य धारा पर यहाँ संक्षेप में विचार कर लेना अप्रासंगिक न होगा। सुविधा की दृष्टि से हम इसे दो काल खण्डों में विभाजित कर सकते हैं।

१- हिन्दी- पूर्ववर्ती राम-काव्य धारा
२- हिन्दी की राम काव्य धारा

१-हिन्दी-पूर्ववर्ती राम काव्य-धारा:

हिन्दी से पूर्व राम काव्य की पावन मन्दाकिनी का स्रोत संस्कृत साहित्य में ही प्राप्त होता है जो कि प्राय: आख्यानक काव्य के रूप में ही मिलता है। राम कथा का आदि काव्य 'बाल्मीकि रामायण' ही है जिसमें राम कथा का सर्व प्रथम व्यवस्थित रूप देखने को मिलता है। 'वाल्मीकि रामायण' का रचना काल ६०० ई०पू० से ४०० ई०पू० के मध्य स्वीकार किया गया है। १ 'वाल्मीकि रामायण' में प्राप्त होने वाली राम कथा को किसी प्राचीनतर परम्परा का उत्कृष्ट विकास स्वीकार कर वेदों में उपलब्ध राम, सीता, दशरथ, जनक आदि के नामों को

१-दृष्टव्य हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास-डा०रामकुमार वर्मा पृष्ठ-३३३ संस्करण -

ऐतिहासिकता से राम काव्य के पात्रों को ~~अध्ययन से~~ सम्बद्ध करने का प्रयास भी किया गया है। १ इसके ~~वाल्मीकि रामायण~~ के अध्ययन से इस बात का पता चलता है कि महर्षि वाल्मीकि ने जिस इक्ष्वाकु वंशीय राम की कथा को अपना वर्ण्य विषय बनाया था वह उन्हें जन-श्रुतियों के माध्यम से ही मिली थी। इस संबंध में उनके इस कथन को " इक्ष्वाकु वंश प्रभवो रामो नाम जनैः श्रुतः ।२ प्रमाण स्वरूप मानकर यह स्वीकार कर लेने में कोई आपत्ति नहीं कि आदि कवि ने अपने पूर्ववर्ती काल की समस्त ऐतिहासिक धार्मिक सामग्री तथा जन-श्रुतियों का भली प्रकार आकलन कर अपनी प्रतिभा तथा कल्पना शक्ति के बल पर जिस राम कथा का एक व्यापक फलक पर चित्रांकन किया था वह सचमुच ही अत्यन्त स्पृहणीय तथा अद्वितीय था। महर्षि वाल्मीकि द्वारा प्रस्तुत राम कथा का आदि स्वरूप ही इतना सुगठित, व्यापक, उदात्त तथा पूर्ण था कि उसमें परिवर्तन करने का साहस परवर्ती कवि एक लम्बी अवधि तक नहीं कर सके। सहस्त्रों वर्ष तक उसका स्वरूप अविकल वैसा ही बना रहा ।

'वाल्मीकि रामायण' के पश्चात् रामकथा के प्रधानतथा तीन रूप दिखाई देते हैं/(१) पौराणिक साहित्य के रूप में (२) बौद्ध और जैन कथाओं के रूप में तथा (३) साहित्यिक काव्य रूप में ।

१- पौराणिक साहित्य के अन्तर्गत आने वाली प्रमुख रचनाएँ इसप्रकार हैं:-

१-महाभारत का रामोपाख्यान ३

२-हरिवंश पुराण (चौथी शताब्दी ई०)

३- विष्णु और वायु पुराण(पांचवी शताब्दी ई०)

४- भागवत पुराण (छठी शताब्दी ई०)

५- कूर्म पुराण (आठवीं शताब्दी ई०)

१- डा०फादर कामिल बुल्के- रामकथा उद्भव और विकास पृष्ठ

२- वाल्मीकि रामायण -बालकाण्ड १।८

३- महाभारत वन पर्व तथा शांति पर्व में राम कथा वर्णित है ।
संधौ तु समनु प्राप्ते, त्रेता द्वापस्य च ।
रामो दाशरथि भूत्वा,भविष्यामि जगत्पतिः।।१२।३४८।।

६-नारद पुराण (दशवीं शताब्दी ई०)

७-पद्म पुराण (बारहवीं से १५वीं शताब्दी ई०)[1]

इन सभी पुराणों में पाई जाने वाली राम कथा प्राय: वाल्मीकि रामायण की ही भाँति है।[2] आगे चलकर पौराणिक साहित्य की कथा सामग्री का उपयोग परवर्ती राम काव्यों में किया गया है। डॅा० श्रीकृष्ण लाल ने स्व० श्री रामदास गौड़ द्वारा उल्लिखित ऐसी अनेक रामायणों की चर्चा की है जिनमें उपर्युक्त वस्तु सामग्री के अतिरिक्त इतर कथाओं का भी समावेश है ।[3] इन्हें वे विक्रम की आठवीं शताब्दी से एक सहस्त्र शताब्दी के मध्य की रचना मानते हैं । डॉ० श्रीकृष्ण लाल द्वारा प्रस्तुत रामायणों की सूची इस प्रकार है :-

	रामायण का नाम	रचनाकार	श्लोक संख्या
१-	संवृत रामायण	देवर्षि नारद	२४ हजार
२-	अगस्त रामायण	अगस्त मुनि	१६ हजार
३-	लोमश रामायण	लोमश ऋषि	३३ हजार
४-	मंजुल रामायण	सुतीक्ष्ण मुनि	१लाख२० हजार
५-	रामायण महामाला	शिवपार्वती सम्वाद	५६ हजार
६-	सौहार्द रामायण	शरभंग ऋषि	२४ हजार
७-	रामायणमणि रत्न	वशिष्ठ मुनि	३६ हजार
८-	सौपश्च रामायण	अत्रि मुनि	अज्ञात
९-	सौर्य रामायण	सूर्य हनूमान सम्वाद	अज्ञात
१०-	चान्द्र रामायण	चन्द्रदेव तथा हनूमान संवाद	अज्ञात
११-	श्रवण रामायण	इन्द्र जनक सम्वाद	अज्ञात

१-डा० भगवती प्रसाद सिंह-राम भक्ति में रसिक सम्प्रदाय पृष्ठ ३८

२-डा० श्रीकृष्ण लाल - मानस दर्शन पृष्ठ ८,९ तथा स्व० रामदास गौड़ - हिन्दुत्व

३-डा० श्रीकृष्ण लाल - मानस दर्शन पृष्ठ १०

१२- सुवर्चस् रामायण	सुग्रीव तथा सम्वाद	अज्ञात
१३- मैन्द रामायण	अज्ञात	अज्ञात
१४- सुब्रह्म रामायण	अज्ञात	अज्ञात
१५- देवरामायण	अज्ञात	अज्ञात
१६- आनन्द रामायण	अज्ञात	अज्ञात

प्राचीनता की दृष्टि से धार्मिक परम्परा में `महारामायण` को आदि रामायण माना जाता है और कहा जाता है कि इसमें तीन लाख पचास हजार श्लोक थे १ जिन्हें सात काण्डों में विभक्त कर सम्पूर्ण राम कथा कही गई है। स्वायम्भु मनु के प्रथम सतयुग में भगवान शंकर ने पार्वती को यह रामायण सुनायी थी।२ इसी प्रकार 'अध्यात्म रामायण' स्वयं भगवान शंकर द्वारा रचित मानी जाती है जिसकी कथा उन्होंने स्वयं श्री राम से ही सुनी थी। ३ राम-काव्यों में राम भक्ति सबंधी तात्त्विक तथा दार्शनिक भूमिका प्रदान करने का श्रेय इसी 'अध्यात्म रामायण' को ही माना जाता है। इस दृष्टि से इन रामायणों में अध्यात्म रामायण का महत्त्व सर्वोपरि स्वीकार किया गया है। ४

उपर्युक्त रामायणों में महर्षि वाल्मीकि कृत 'रामायण' से भिन्न कतिपय कथा-प्रसंगों का उल्लेख मिलता है- जिनका प्रभाव कालांतर में किसी न किसी रूप में हिन्दी के राम-काव्य पर अवश्य दिखाई देता है विशेष-कर इन रामायणों की कथा का बहुत सा भाग तुलसी कृत 'राम-चरितमानस' में अवश्य देखा जा सकता है। इन कथाओं में मनु-सतरूपा की कथा `संवृत रामायण` से, सती मोह, उनका त्याग, मदन-दहन तथा

१- डा० श्री कृष्ण लाल - मानस दर्शन पृष्ठ -८

२- वही

३- अध्यात्म रामचरितम् रामेणोक्तं पुरायम् ।
अध्यात्म रामायण-सर्ग-१

४- डा०श्री कृष्ण लाल -मानस दर्शन पृष्ठ-८

पार्वती - विवाह की कथा 'लोमश रामायण' से, प्रताप भानु-कपटी मुनि कथा, शबरी के प्रसंग में नवधा भक्ति का निरूपण - 'मंजुल रामायण' से, शिवजी का मरालवेश में नीलगिरि पर निवास काकभुसुण्डि से राम कथा श्रवण, गरुड़ मोह और काक का उपदेश 'रामायण महामाला' से, नारद मोह की कथा, सूर्पणखा का आगमन और नासिका-कर्ण-निपात खरदूषण युद्ध, मारीचका कपट कुरंग व्यवहार सीता का मर्म वचन कहना, रावण का छल और सीता हरण, जटायु का युद्ध तथा मोक्ष 'सौहार्द रामायण' से महर्षि वाल्मीकि द्वारा निरूपित राम निकेत तथा वेद और शम्भु द्वारा भगवान राम की स्तुति 'रामायण मणि रत्न' से तुलसी ने ग्रहण किया है १ तथा इनमें से अधिकांश कथाओं को उनके परवर्ती कवियों ने भी उसी रूप में ग्रहण किया है।

२- बौद्ध तथा जैन साहित्य में राम कथा का रूप वाल्मीकि रामायण से भिन्न मिलता है। 'दशरथ कथानकम्' तथा 'दशरथ जातकम्' के साथ ही कनिष्क-युगीन कवि अश्वघोष के बुद्ध चरित में भी रामकथा का उल्लेख मिलता है वे 'वाल्मीकि रामायण' की कथा से पूर्व रामचरित के प्रथम रचयिता के रूप में च्यवन ऋषि को मानते हैं। २ वाल्मीकि रामायण को आधार मानकर विमल सूरि ने 'पउम चरिउ' नामक प्राकृत जैन काव्य लिखा जिसका रचना काल ईसवी की पहली शताब्दी माना गया है। ३ यह ग्रन्थ जैन धर्म और तत्त्ववाद के अनुकूल ही लिखा गया था इसलिये जैन धर्म की धार्मिक भावना के कारण ही उसके रचयिता ने वाल्मीकि रामायण की राम कथा में महत्वपूर्ण परिवर्तन कर दिया है। इस ग्रन्थ में वाल्मीकि को मिथ्यावादी कहा गया है। ४ 'पउम चरिउ' नायक का नाम पद्म (राम) रखा गया है। इसमें दशरथ की तीन रानियों का उल्लेख

१- डा० श्री कृष्ण लाल - मानस दर्शन - पृष्ठ ८-९

२- द्रष्टव्य अश्वघोष कृत बुद्ध चरित १।४८

३- डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी -हिन्दी साहित्य की भूमिका पृष्ठ-१८४

४- डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी -हिन्दी साहित्य की भूमिका पृष्ठ-२२०

भक्ति आन्दोलन को डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी ने पराजित जाति के नैराश्य के ईश्वरोन्मुखी होने का द्योतक न मानकर सतत् गतिशील भारतीय चिन्ता धारा के क्रमश: विकास का परिणाम माना है। १
१५ वीं से १६ वीं शताब्दी के मध्य के भारतीय जन जीवन पर विचार करते हुए डॉ० मदन गोपाल गुप्त भी कहते हैं कि ' इस युग का अधिकांश भाग जनता की निराशा के स्थान पर उसकी शक्ति के नवोत्कर्ष के कारण उसकी आशा-आकांक्षा तथा जागृति के वातावरण से युक्त है। '२ भक्ति आन्दोलन का विकास पन्द्रहवीं शती में हुआ है जो देश की जनता की पलायन वादी मनोवृत्ति का प्रतीक न होकर देश की जनता की उस राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति है जिसका नेतृत्व राजनीतिक शक्तियों से दूर हटकर समाज के नेता कर रहे थे । ' ३ भक्ति-आन्दोलन के रूप में उभरती हुई नव चेतना आक्रान्त तथा पीड़ित जनजीवन के संघर्षों की कहानी के रूप में नवीन उद्भावना के सहित प्रतिभा सम्पन्न कवियों के काव्य के माध्यम से युग जीवन की सफल अभिव्यक्ति देने में सफल हो सकी। हिन्दी रामकाव्य इस सांस्कृतिक चेतना का ही परिणाम है। राम के रूप में एक आदर्श धीरोदात्त जननायक के प्रेरणास्पद चरित्र का गान इस युग की संघर्षरत जन जीवन की महान अभिव्यक्ति थी ।

हिन्दी राम-भक्ति काव्य-धारा का परिचय देते हुये आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है कि ' यद्यपि स्वामी रामानन्द जी की शिष्य परम्परा के द्वारा देश के बड़े भाग में राम-भक्ति की पुष्टि निरन्तर होती आ रही थी और भक्त लोग फुटकल पदों में राम की महिमा गाते आ रहे थे पर हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में भक्ति का परमोज्ज्वल प्रकाश विक्रम की सत्रहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में गोस्वामी तुलसीदास जी की वाणी

१-डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी- हिन्दी साहित्य की भूमिका पृष्ठ- ४५
२-डा०मदन गोपाल गुप्त- मध्य कालीन हिन्दी काव्य में भारतीय संस्कृति - पृष्ठ-१०७
३- वही पृष्ठ -१२०

द्वारा स्फुरित हुआ।" १ भक्तों द्वारा फुटकल पदों में राम भक्ति की महिमा के गान मात्र करने का उपयुक्त उल्लेख सूरदास, अग्रदास तथा नाभादास की रचनाओं की ओर संकेत करता प्रतीत होता है किन्तु यत्र तत्र बिखरी हुई सूचनाओं द्वारा कतिपय छोटी बड़ी ऐसी रचनाओं पर भी प्रकाश पड़ता है जिन्हें प्रबन्धात्मक राम काव्यों की कोटि में रखा जा सकता है। यहाँ हम अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से सम्पूर्ण हिन्दी राम काव्य धारा को दो काल खण्डों में विभाजित कर सकते हैं क्योंकि हमारे अध्ययन का क्षेत्र केवल प्रबन्धात्मक राम काव्य धारा तक ही सीमित है। इस विभाजन में हम प्रथम को (१) मानस पूर्ववर्ती प्रबन्धात्मक राम काव्य धारा तथा द्वितीय (२) को मानस परवर्ती प्रबन्धात्मक राम काव्य धारा के अन्तर्गत रख सकते हैं । यहां हम इन दोनों राम काव्य धाराओं में आने वाली प्रबन्धात्मक रचनाओं पर विचार करते हुये इस तथ्य को लक्ष्य करने का प्रयास करेंगे कि हिन्दी में राम काव्य धारा के अन्तर्गत अब तक प्राप्त होने वाली समस्त रचनाओं में किस रचना को प्रथम प्रबन्ध के रूप में स्वीकार कर सकते हैं ।

१-मानस पूर्ववर्ती प्रबन्धात्मक राम काव्य धारा

प्रथम प्रबन्धात्मक रचना:- मानस पूर्ववर्ती राम काव्य धारा का अनुशीलन करने पर जिस प्रबन्धात्मक रचना का उल्लेख हमें सर्व प्रथम मिलता है वह है कवि भूपति कृत ' रामचरित रामायन' । यह रचना अब तक अध्ययन के लिये उपलब्ध नहीं हो सकी केवल इसका उल्लेख मात्र ही खोज-रिपोर्ट में मिलता है। २ अत्यधिक प्रयत्न करने पर भी यह कृति लेखक को देखने के लिये उपलब्ध नहीं हो सकी। किसी प्रामाणिक सूचना के अभाव में इस कृति के सबंध में कुछ भी निश्चय पूर्वक कहना सम्भव नहीं । अत: यहाँ से हिन्दी की प्रबन्धात्मक राम काव्य धारा का उद्गम स्वीकार करना उचित

१-हिन्दी साहित्य का इतिहास संस्करण २०१८ वि० पृष्ठ- १२१ शीर्षक सगुण धारा राम भक्ति शाखा ।

२-नागरी प्रचारिणी सभा काशी- खोज रिपोर्ट , १९०६-०७ पृष्ठ-१

नहीं प्रतीत होता। `रामचरित रानायन` का रचना काल संवत् १३४२ वि० माना जाता है किन्तु जैसा इससे पूर्व की पंक्तियों में संकेत किया जा चुका है कि रचना के उपलब्ध न होने के कारण तथा अन्य किसी प्रामाणिक सामग्री के अभाव में यहां से हिन्दी के प्रबन्धात्मक राम काव्यों की धारा का प्रवर्तन मानना अधिक उपयुक्त नहीं प्रतीत होता। इसके पश्चात् गोस्वामी विष्णुदास कृत ` रामायणी कथा ` का उल्लेख मिलता है जिसे वाल्मीकि रामायण का उल्था बताया जाता है। एतद्विषयक सूचनायें १ भी संदिग्धत: से तब तक मुक्त ही कहीं जायेगी जब तक कि इसकी हस्तलिखित प्रति प्राप्त न हो जाये। यह अवश्य है कि गोस्वामी विष्णुदास कृत ` रुक्मिणी मंगल ` के गेय पदों के अतिरिक्त ` स्वर्गारोहण ` कथा `महाभारत कथा ` और ` मकर ध्वज ` के अस्तित्व अब तक प्रकाश में आ चुके हैं । २

राम काव्य की प्रबन्ध धारा के दृष्टिकोण में उक्त दोनों संदिग्ध कृतियों के पश्चात् हमें सर्वप्रथम `ईश्वरदास कृत ` भरत विलाप ` के अस्तित्व का पता चलता है। यद्यपि इसके रचना काल का निश्चित पता नहीं चलता किन्तु कवि की अन्य कृतियों में `सत्यवती कथा ` का रचनाकाल सवंत् १५५८ वि० है जिसके आधारपर ` भरत विलाप ` के रचनाकाल को उसके आसपास माना जा सकता है। इसकी तीन हस्तलिखित प्रतियाँ एकडला, बहरायच तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन में उपलब्ध हैं जिनमें संबधित प्राचीन प्रति एकडला की है। इसका प्रतिलिपि काल संवत् १८१६ है। ३ इनकी दूसरी कृति ` अंगद पैज ` भी हमारे विषय से सम्बद्ध ही कही जा सकती है। इस प्रकार अब तक प्राप्त सूचनाओं के आधार पर प्रबन्धात्मक राम काव्य धारा का आरम्भ इन दो खण्ड काव्यों से माना जा सकता है। ` भरत विलाप ` की भाषा प्राचीन अवधी है और भाषा प्रयोग की दृष्टि से `सत्यवती कथा` (रचना काल संवत् १५५८ वि०) से पूर्ववर्ती काल की कृति प्रतीत होती है ।

१-दृष्टव्य (क) हिन्दी साहित्य द्वितीय खण्ड सं० डा०धीरेन्द्रवर्मा पृष्ठ ३०४-५ राम काव्य ले० डा० माताप्रसाद गुप्त ।
(ख) खोज विवरण नागरी प्रचारिणी सभा सं० १९४१,४३ तथा१९०६ -१९०८
२-दृष्टव्य हरिहरनिवास द्विवेदी -मध्यदेशीय भाषा पृष्ठ-१३७-१३८ शीर्षक 'पद्मावत -मानस और रामचन्द्रिका कीपृष्ठभूमि ' तथा परिशिष्ट।
३-डा०शिवगोपाल मिश्र,सत्यवती कथा तथा अन्य कृतियां-भरतविलाप की भू

अत: हमारी इस सम्भावना को सआधार ही कहा जायेगा कि हिन्दी के प्रबन्धात्मक राम काव्य धारा का आरम्भ अब तक उपलब्ध आधारभूत सामग्री के आधार पर १५५५-५८ वि० के आसपास/ भरत विलाप की रचना से मानना जा सकता है।

मिश्र बन्धुओं ने अपने ग्रन्थ ' मिश्र बन्धु विनोद ' में बालचन्द्र जैन कृत " राम सीता चरित्र " का उल्लेख किया है जिसका रचनाकाल उन्होंने सं० १५८० वि० माना है।१ जो महाकवि तुलसीदास जी के रामचरित मानस के पूर्व की रचना है किन्तु उल्लेख मात्र के अतिरिक्त ग्रन्थ संबंधी अन्य जानकारी उपलब्ध नहीं होती। इसी प्रकार कवि सुन्दर दास कृत 'हनूमान चरित ' रचनाकाल सं० १६१६ वि० एवं ब्रह्मराय मल्लजैन कृत हनूमान चरित रचनाकाल सं० १६१६ वि० तथा ब्रह्मजिन दास कृत ' रामचरित या राम राम ' का रचना काल भी सं० १६१६ वि० माना गया है। इन ग्रन्थों का उल्लेख डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने हिन्दी साहित्य में किया है। २ 'हनुमच्चरित' नामक एक अन्य रचना का उल्लेख मिश्रबन्धुओं ने किया है जिसके रचयिता राममल्ल पाण्डे बताये गये हैं और रचनाकाल सं० १६१६ वि० है। ३ यह सभी कृतियाँ अब तक सम्यक् अध्ययन के लिये उपलब्ध नहीं हो सकीं। अत: विस्तृत जानकारी के अभाव में इन कृतियों पर कुछ भी कहना न तो सम्भव ही है और न उपयुक्त ही। इसप्रकार मानस पूर्ववर्ती प्रबन्धात्मक राम काव्यों को - जिनका उल्लेख ऊपर किया जा चुका है - हम अब तक उपलब्ध सूचना के आधार पर कालक्रम के अनुसार इस निम्नप्रकार से रख सकते हैं।

मानस पूर्ववर्ती प्रबन्धात्मक राम काव्य

रचना	रचयिता	रचनाकाल
१-रामचरित रामायण	भूपति	१३४२ वि०
२-रामायणी कथा	गो० विष्णुदास	१४९२ वि०

१-दृष्टव्य मिश्रबन्धु विनोद भाग -१ पृष्ठ २८६ संस्करण द्वितीय सं० १९८३वि०
२-दृष्टव्य हिन्दी साहित्य प्रथम संस्करण पृष्ठ- ३८६
३-मिश्र-बन्धु विनोद भाग-१ द्वितीय संस्करण सं० १९८३ वि० पृष्ठ ३१६

३-रावण मन्दोदरी सम्वाद	मुनि लावण्य कृत जैन रामकथा	१५०० वि० १
४-भरत विलाप	ईश्वर दास	१५५५ वि०
५-अंगद पैज	ईश्वरदास	१५५५ वि०
६-राम सीता चरित्र	बालचन्द जैन	१५८० वि०
७-हनूमान चरित्र	सुन्दर दास	१६१६ वि०
८-हनूमान चरित	ब्रह्मरायमल्ल जैन	१६१६ वि०
९-हनुमच्चरित्र	रायमल्ल पाण्डे	१६१६ वि०
१०-रामचरित या राम रामरास	ब्रह्मजिनदास	१६१६ वि०

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर इस निष्कर्ष पर सरलता से पहुँचा जा सकता है कि इन रचनाओं का कालक्रम के दृष्टिकोण से भले ही महत्व स्वीकार किया जाये किन्तु उनमें से एक भी रचना ऐसी नहीं दिखाई देती जो प्रारम्भ में ही विवेचित प्रबन्धात्मक राम काव्य धारा की व्यापक चेतना को प्रस्तुत करती हो। अतएव आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का यह कथन समीचीन ही कहा जायेगा कि "रामभक्ति का वह परम विशद साहित्यिक संदर्भ इन्हीं भक्त शिरोमणि द्वारा संघटित हुआ जिसमें हिन्दी काव्य की प्रौढ़ता के युग का आरम्भ हुआ।" २

रामचरित मानस की रचना तथा हिन्दी के प्रबन्धात्मक रामकाव्य का उत्थान:

हिन्दी राम काव्य का साहित्यिक, धार्मिक, सांस्कृतिक तथा भक्ति विषयक पूर्ण विकसित तथा सुगठित रूप महाकवि तुलसीदास के रामचरितमानस में ही सर्वप्रथम मिलता है। भाषा, छन्द, रस, अलंकार वस्तु संगठन चारित्रिक उदात्तता आदि सम्पूर्ण साहित्यिक गुणों से युक्त तथा समकालीन युगबोध से सम्पृक्त 'रामचरित मानस' हिन्दी में अवधी भाषा का प्रथम प्रबन्धात्मक राम काव्य है, ~~जिसमें~~ और इसे विभिन्न सूत्रों से प्राप्त कथा प्रसंगों को मूल कथा के साथ जोड़कर अपनी अद्वितीय काव्य प्रतिभा के आधार पर ~~उसे काव्यात्मक उपलब्धि के श्रेष्ठतम् ग्रन्थ के रूप में~~ जीवनगत अभिव्यक्ति की समग्रता के साथ विश्व-साहित्य के

१-इस ग्रन्थ का उल्लेख 'हिन्दी साहित्य' प्रथम संस्करण पृष्ठ ३०६ में हुआ है। इसे खण्ड काव्य कहा गया है।

२-दृष्टव्य -हिन्दी साहित्य का इतिहास-आचार्य रामचन्द्र शुक्ल -२०१८ सं पृष्ठ-१२०

सम्मुख प्रस्तुत किया गया है।

२- मानस परवर्ती प्रबन्धात्मक राम काव्य

महाकवि तुलसीदास के पश्चात् हिन्दी में राम काव्य की दृष्टि से १७ वीं तथा अठारहवीं शताब्दी का काल अत्यन्त महत्वपूर्ण है। तुलसी परवर्ती रचनायें 'रामचरित मानस' की तुलना में भले ही उसके समकक्ष की न हो किन्तु उनमें से अनेक का साहित्यिक महत्व अनुपेक्षणीय है। काव्य धारा के विकास एवं तद्गत साहित्यिक उपलब्धियों के दृष्टिकोण से उनके योगदान का अपना निजी और साथ ही ऐतिहासिक महत्व अवश्य है। इस संबंध में विस्तृत विचार परवर्ती अध्याय में किया जायेगा। द्वितीयत: यहाँ यह उल्लेखनीय है कि राम-भक्ति-धारा का साहित्यिक महत्व अकेले तुलसीदास के कारण ही मानना १ एक प्रकार से इस धारा के अनेक कृती कवियों के साथ अन्याय होगा क्योंकि बिना समुचित परीक्षण के ऐसी मान्यताओं और आग्रहों द्वारा अध्ययन की दिशा अवरुद्ध हो जाती है और कृतियों का उपयुक्त मूल्यांकन भी नहीं हो पाता। 'मानस' ~~निश्चित~~ निश्चय ही एक अद्वितीय और अत्यन्त उत्कृष्ट प्रबन्ध काव्य है तथा गोस्वामी तुलसीदास जी को इसी आधार पर हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ कवि स्वीकार कर लेने में कुछ भी हिचकिचाहट नहीं हो सकती, किन्तु इससे इस धारा के अन्य कवियों की रचनात्मक प्रतिभा और कृतियों के समुचित मूल्यांकन में किसी प्रकार की बाधा नहीं उत्पन्न होती। अस्तु मानस परवर्ती काल में रचित प्रबन्धात्मक राम काव्य धारा की रचनाओं को काल-क्रम के आधार पर ~~निम्नांकित ढंग से~~ रखा जा ~~सकता~~ रहा है :—

मानस परवर्ती (सं० १६३१ से १८०० वि०) प्रबन्धात्मक राम काव्य

रचना	रचनाकार	रचनाकाल
१-रामअवतार लीला	मलूकदास	कवि का जन्म सं० १६३१ तथा मृत्यु १७३६ वि० माना गया है।

१- दृष्टव्य-डा० माताप्रसाद गुप्त-हिन्दी साहित्य-द्वितीय खण्ड पृष्ठ ३०४

२- दृष्टव्य-हिन्दी साहित्य कोष-भाग २ पृष्ठ ४०६

रचना	रचनाकार	रचना काल
१-रामलला नहछू	गौ० तुलसीदास	सं० १६४० वि०
२- रामप्रकाश रामायण	मुनिलाल	सं० १६४२ वि०
३- जानकी मंगल	गौ० तुलसीदास	सं० १६४३ वि०
४-रामचन्द्रिका	केशवदास	सं० १६५८ वि०
५-गुण राम रासौ	माधौदास चारण	सं० १६७५ वि०
६-रामायण	कपूरचन्द	सं० १७०० वि०
७-हनुमान दूत:	पुरुषोत्तम	सं० १७०१ वि०
८-सीता चरित्र	रामचन्द	सं० १७१३ वि०
१०-रामायण	भगवन्तराय खीची	सन् १७२७ वि०
१०-अर्कघविलास	लालदास	सं० १७३२ वि०
११-आंद पर्व	लालदास	सं० १७३२ के आसपास
१२-अवतार चरित्र	बारहट नरहरिदास	सं० १७३३ वि०
१३-रामाश्वमेध	नारायणदास पूर्वनाम उग्र	सं० १७३६ वि०
१४-गोविन्द रामायण	गुरुगोविन्द सिंह	सं० १७५५वि०
१५-अवध सागर	जानकी रसिक शरण	सं० १७६० वि०
१६-सीतायन	रामप्रिया शरण	सं० १७६० वि०
१७- ब रघुवंश दीपक	सहजराम	सं० १७८६ वि०
१८- राम चरित्र	रामाधीन	१८वीं शताब्दी का
२०- रामायण	चन्दकवि	१८वी० शताब्दी की र

उपर्युक्त रचनाओं में प्रबन्ध काव्य के अन्तर्गत महाकाव्य तथा खण्ड काव्य दोनों के ही स्तर की रचनायें हैं जिनमें कुछ रचनाओं को छोड़कर प्राय: सभी रचनाओं को लेखक ने देखा है। अस्तु इन रचनाओं का विस्तृत परिचय हम अगले अध्याय में प्रस्तुत करेंगे। यहाँ इनका उल्लेख मात्र ही पर्याप्त होगा। यह सभी ग्रन्थ यद्यपि आधार भूत मान्यता में राम भक्ति से ही प्रभावित हैं।

किन्तु विशिष्ट उपासना पद्धति के कारण उनका रूप रामचरित मानस से भिन्न हो गया है। प्रबन्धात्मक रचनायें होने के कारण इनके माध्यम से हिन्दी राम काव्य धारा में नवीन उद्भावनाओं को विपुल अवकाश मिला है।

हिन्दी राम काव्य-परम्परा में राम के अतिरिक्त राम कथा के अन्य पात्रों तथा उनसे संबंधित छोटी-छोटी घटनाओं को लेकर बहुत सी रचनायें उपलब्ध होती हैं जिनमें हनुमान, सीता, लक्ष्मण तथा भरत के जीवन पर मुक्तक तथा प्रबन्ध दोनों ही प्रकार के काव्य मिलते हैं। इसी प्रकार पाण्डित्य प्रदर्शन तथा कवित्व शक्ति का परिचय देने की दृष्टि से भी कतिपय कवियों की राम काव्य सबंधी रचनायें मिलती हैं जिनमें केशवदास की 'रामचन्द्रिका' तथा सेनापति की रचना 'राम रसायन' विशेष उल्लेखनीय है। मुक्तक रचनाओं में राम के यशोगान सबंधी पद, आत्म निवेदन तथा राम नाम के जप के लिये भजन, लावनी, ख्याल आदि विभिन्न रागों तथा संगीत की विभिन्न रागनियों में राम काव्य का रूप मिलता है। लोकगीतों तथा लोक-वार्ताओं में भी राम काव्य का पद्यबद्ध रूप मिलता है। विभिन्न शैलियों में रचना करने की प्रवृत्ति हिन्दी राम काव्य के प्रारम्भ से ही दिखाई देती है किन्तु उसका विकसित रूप हमें महाकवि 'तुलसीदास जी' के काव्य में ही मिलता है। 'कवितावली', 'गीतावली', 'विनयपत्रिका'- जैसी कवित्त, सवैया, गीत तथा पदों वाली शैली में राम काव्य की रचना करने के साथ ही कवि ने सोहले, वरवै तथा लोक गीतों की अन्य शैली पर उनके काव्य राम लला नहछू, वरवै रामायण इसके उत्कृष्ट उदाहरण हैं। तुलसी के बाद यह प्रवृत्ति रसिक भावना से प्रेरित राम काव्य के रचयिताओं में पाई जाती है जिनमें श्रृंगार परम ललित पदावली तथा कथा प्रसंगों का विशेष प्रयोग किया गया है।

निष्कर्ष :

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट मत स्थिर किया जा सकता है कि हिन्दी राम काव्य परम्परा विभिन्न भाव भूमियों, काव्य शैलियों तथा

युगीन चेतनाओं के इन्द्र धनुषी रंगों से मानव-जीवन के व्यापक फलक पर नये नये चित्र संवारती हुई सतत् गतिशील रही है। उसकी यात्रा कभी विचारों से बोझिल तो कभी भावों की गहराई के तल को स्पर्श करती हुई नवीन उद्भावनाओं के आयामों के मध्य होकर अपने गंतव्य की ओर बढ़ती रही है। बदलते हुए सामाजिक मूल्यों तथा उभरती हुई सांस्कृतिक चेतना तथा विभिन्न राजनीतिक परिस्थितियों से उत्पन्न युगीन चेतना से प्रभावित होकर भी अपने मूल रूप को अब तक सुरक्षित रखने की अपूर्व क्षमता उसमें है। काव्य गत, शैली गत, विषय गत, धार्मिक मान्यताओं तथा विश्वासों पर आधारित राम काव्य के ऐसे अनेक क्षेत्र हैं जिनमें एतद् संबंधी प्रचुर सामग्री उपलब्ध होती है जिसका ~~परीक्षण अगले अध्याय में विस्तार के साथ करना अधिक उचित होगा।~~
अनुशीलन परवर्ती अध्याय का विषय है।

0000000000